ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 26 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 दिसम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 मा. शु.-15

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द 11 दिसम्बर, 2022 को सफलता के साथ हुआ सम्पन्न

हरियाणा में आर्य जनता की मांग जेवर (अलीगड़) हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा रखा जाये

ऋषि दयानन्द की दूसरी जन्मशती वर्ष 2024 में मनाई जायेगी, इसकी तैयारी के लिए प्रत्येक गांव स्तर पर टीमें गठित की जायें

– स्वामी आर्यवेश

वर्तमान समय में आर्य समाज की और अधिक आवश्यकता है – स्वामी ओमवेश

पूरे देश में सभी प्रकार के नशों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये सरकार – स्वामी रामवेश

स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है– स्वामी आदित्यवेश

युवकों को आर्य समाज से जोड़ने के लिए राष्ट्रीय अभियान चलाया जाये – स्वामी नित्यानन्द

जीन्द (हरियाणा) के इस महासम्मेलन के अवसर पर कुछ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव भी पास किये किए गए जो निम्न प्रकार हैं – शराब सहित सभी मादक पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे, गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये, गाय के लिए गौचर भूमि सुरक्षित करना, गूगल पर परोसी जाने वाली पोर्नोग्राफी पर रोक लगाना और सरकार के बड़े पदों पर बैठे लोगों के द्वारा पाखण्ड एवं तर्क विरोधी कार्यक्रम को प्रचारित न किया जाए तथा उत्तर प्रदेश में बनने वाले हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा रखना शामिल है। उपरोक्त प्रस्तावों को तैयार करके देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को ज्ञापन सौंपा जाये।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी व पं. राम प्रसाद बिस्मिल के बलिदान की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 11 दिसम्बर, 2022 को महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम 3705, अर्बन स्टेट जीन्द के महर्षि दयानन्द पार्क में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। 11 दिसम्बर, 2022 को विशाल आर्य महासम्मेलन प्रातः यज्ञ के उपरान्त प्रारम्भ हुआ तथा सायंकाल तक चलता रहा। महासम्मेलन में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त, स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्ना मंत्री एवं वर्तमान विधायक, हरियाणा आर्य युवक परिषद् के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी मुक्तिवेश जी रोहतक, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, श्री सुभाष श्योराण, श्री दलबीर आर्य मुकलान, श्री सत्य प्रकाश आर्य व श्री जयवीर सोनी (हिसार), श्री अशोक वर्मा (सिरसा), श्री सत्यवीर आर्य (कैथल), श्री इंद्रजीत आर्य, श्री अनिल आर्य एवं श्री अश्विनी आर्य (नरवाना), प्रिं. आजाद सिंह (सोनीपत), श्री सज्जन सिंह राठी, श्री वीरेंद्र आर्य (जुलाना), श्री अशोक आर्य, श्री सूरजमल (जुलानी), श्री देवेन्द्र सहारण, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री जगफूल सिंह ढिल्लों, श्री बलजीत हुड्डा आदि अपने विचार रखे तथा श्री सहदेव बेधड़क, श्री कुलदीप आर्य, श्री हवा सिंह तूफान व स्वामी मुक्तिवेश जी, महात्मा योगेश्वरमुनि व श्री सुनील शास्त्री आदि ने भजनों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को संबोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आगामी वर्ष 2024 में ऋषि दयानन्द सरस्वती के जन्म के 200 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती की भव्य तैयारियों के लिए आर्य समाज के तत्वावधान में हरियाणा के प्रत्येक गांव में आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज, आर्य युवक परिषद् तथा बेटी बचाओ अभियान की इकाइयाँ गठित करके आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती भव्यता के साथ मनाने का कार्यक्रम अभी से सुनिश्चित करें। हम सबको वर्ष 2024 तक हरियाणा में 100 नये संन्यासी, वानप्रस्थ ब्रह्मचारी तैयार करने की महत्त्वाकांक्षी योजना लेकर कार्य करने की आवश्यकता है तथा कम से कम 500 युवा निर्माण शिविरों की योजना तैयार करके अभी से क्रियान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। हरियाणा प्रान्त के सभी जिलों में जन–चेतना यात्राओं का आयोजन किया जाये। स्वामी जी ने आगे बताया कि फरवरी माह में प्रांतीय जन–चेतना यात्रा के माध्यम से नशाखोरी और पाखंड के विरुद्ध जन आंदोलन प्रारम्भ होगा। आप सभी आर्य महानुभावों से अपील है कि इस जन–चेतना यात्रा को

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

—स्व० डॉ० ज्ञानचन्द्र

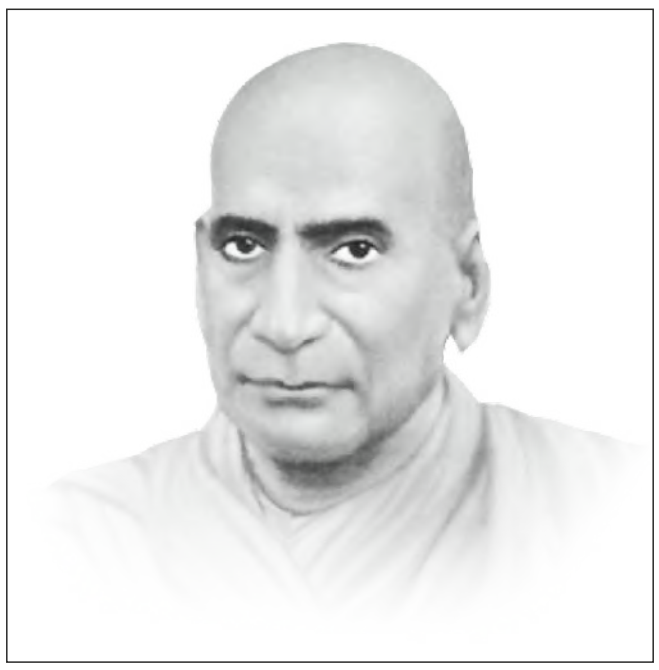

स्यात् १८९६ या ९८ का सन् था। तब मेरे जीवन का बाल्यकाल ही था, जब मैंने श्री लाला मुन्शीराम जी जिज्ञासु को अपने श्री पूज्य पिता जी के साथ वार्ता करते देखा, उस दिन चर्चा हो रही थी गुरुकुल के लिये भूमि को। मेरे दोनों ही पूज्य भोजन करने बैठे थे, और चल रही थी वार्ता भी। कुछ ही दिनों के पश्चात् वह दोनों यात्रा की लिये गये और भूमि देख कर लौटे तो पिता जी हमारी पूज्य माता जी को सुना रहे थे, बड़ा भयंकर जंगल है– हे परमेश्वर, भगवान् बचावे ! पर वह तो वहां गुरुकुल बनाने का उसकी स्थापना करने का निश्चय ही कर बैठे हैं और सभा के लोगों के विरोध की भी चिन्ता नहीं कर रहे। थोड़े काल में बात पक्की हुई, गुरुकुल बन गया। निर्भीक मुन्शीराम ने बड़ी तत्परता से उस भयंकर जंगल में जहां जंगली पशुओं का निवास था महान् ज्ञान का संस्थान आरम्भ कर दिया, शिक्षा का एक अद्वितीय केन्द्र सथापित हो गया। सरकार और जनता दोनों स्तब्ध थे कि इस लोह पुरुष ने किस प्रकार संसार के सन्मुख प्राचीन आदर्श की स्थापना करने में कमाल कर दी है। वीर–धीर और गम्भीर मूर्ति ने अपनी बात को पूर्ण करके सिद्ध कर दिया कि भारत वर्ष को आर्यावर्त बनाने के लिये बढ़े परिश्रम और त्याग की आवश्यकता है।

(२) गुरुकुलोत्सव पर यात्री जाते समय तो नहीं, परन्तु लौटते समय तो सभी हरिद्वार अवश्य जाते, और वहां प्रायः उन दिनों पंडे लोगों की भिडंत हो ही जाती। अनेक बार की बात नहीं करता। एक बार जालन्धर निवासी मधुर गायनाचार्य श्री भगत मंगत राम जी अपने रसीले भजन बोलते हजारों आर्य नर–नारियों के साथ कीर्तन करते वहां के बाजार से चले जा रहे थे। यह देख हल्ला बोल दिया वहां के मूर्ख पंडों ने, निहत्थे आर्य यात्रियों पर, लाठियों से प्रहार हुआ सो हुआ। वहां के बाजार के एक प्रसिद्ध हलवाई ने अपनी उबलती घी की कढ़ाई में से डोरीयां भर–भर घी उछाल २ कर आर्यों पर डालना आरम्भ किया। इस घटना को मैंने जाकर महात्मा जी से वर्णन किया, सुनते ही एक वीर जनरेल की भान्ति घोड़े पर सवार हो घटनास्थल पर आ पहुँचे। पंड़े लोग उन्हें देख कर कांपने लगे।

(३) अमृतसर में अंग्रेज नौकर शाही ने जब अपनी पाशविक शक्ति का प्रयोग कर नर नारियों और बालकों तक को गोलियों से भून डाला और जलियांवाला बाग में रक्त की होली खेल कर कायर डायर ने अपनी पश्चिमी सभ्यता का नंगा नाच नाच लिया, तब बड़े–बड़े वीर कहलाने वाले वहां प्रवेश नहीं कर पाये, चारों ओर आतंक छा रहा था, उस समय दयानन्द का यही प्यारा वीर महात्मा पंजाब की हतोत्साहित जनता को प्रोत्साहित करने के लिये पहुँचे थे और इस महान् वीर की वीरता के कारण ही तो कांग्रेस का ऐतिहासिक स्मरणीय अधिवेशन हो गया। उस समय मुझे स्वामी जी के साथ कई मास तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब मुझे ज्ञान हुआ कि वह तो महान् बलवान् शक्ति हैं।

(४) उनके जीवन की घटनाओं का उल्लेख करने के लिये तो एक मोटा ग्रन्थ लिखा जा सकता है, क्योंकि उनका तो एक–एक क्षण इस प्रकार व्यतीत हुआ है जिसमें निर्भीकता भरी पड़ी है। चांदनी चौक देहली की घटना स्मरण आती है तो दिखाई देता है, गारेखे संगीनें ताने खड़े हैं तो आप छातीं ताने आगे बढ़े हैं। जालन्धर में एक बार रहेतियों की शुद्धि की गई तो नगर में हल चल मच गई। हिन्दुओं ने आर्यों को बिरादरी से पृथक करने की धमकी दी। तब इस वीर पुरुष ने बड़े बल से कहा कि आर्यों को तुम्हारी ऐसी बिरादरी की आवश्यकता नहीं जो मनुष्यों में भेद भाव करती हो। उन्होंने इस जात पात को कुचल के रख दिया।

आप रोगी थे, मैंने अमृतसर आर्य कुमार सभा के अधिवेशन में आने के लिये लिखा, वहां का उत्सव २० से २८ दिसम्बर १९२६ को था। स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया, ज्ञान एक दिन यहां आओ, और यदि मैं फिर अच्छा हो गया तो आ ही जाऊँगा। मैं १६ दिसम्बर को देहली पहुँचा। यह स्वामी जी से मेरा अन्तिम मिलन था। २३ तारीख को आपके पास एक आततायी यवन ने आकर कहा मुझे शुद्ध कर लीजिये, मुझे पानी दीजिये, रक्त के प्यासे ने पानी पिया, पर प्यास न बुझी, संन्यासी के सीने से रक्त की धार बहा कर पी। वीर श्रद्धानन्द ने वीरता पूर्वक अपने प्राण आर्य जाति पर न्योछावर कर दिये।

उस दिन श्रद्धानन्द ने अपनी पूर्ण श्रद्धा से अपने रक्त द्वारा वैदिक धर्म की वाटिका को सींचा तो क्रूर हृदय लोगों ने अपनी क्रूरता का परिचय दिया। हसन निजामी ने एक लेख लिखा 'फ्राम देहली टू अहमदाबाद' जिसमें वैदिक धर्म के इस अद्वितीय वीर पर कटु कटाक्ष किये। उन दिनों मैं अमृतसर से एक मासिक पत्रिका उर्दू में निकालता था जिसका नाम ''वर्तमान'' था। मैंने उस लेख का उत्तर उसमें प्रकाशित किया, **''सैरे दोजख''** बस फिर क्या था यवन कैम्प में खलबली मची, अंग्रेज को विवश किया गया, मेरे विरुद्ध अभियान चला कर हाई कोर्ट में **'रंगीला रसूल'** का स्थानावत् टैस्ट केस बनाया गया। जांच तो क्या होनी थी, अंग्रेज ने उनको खुश करना था किया, हमें दण्ड दिया गया। मैंने अपने जीवन में अपने उस परम तेजस्वी वीर से सीखा कि धर्म पथ में आने वाले संकटों को हंसी–हंसी सहन करें, कभी भयभीत नहीं होना, और आगे ही आगे बढ़ते रहना चाहिये।

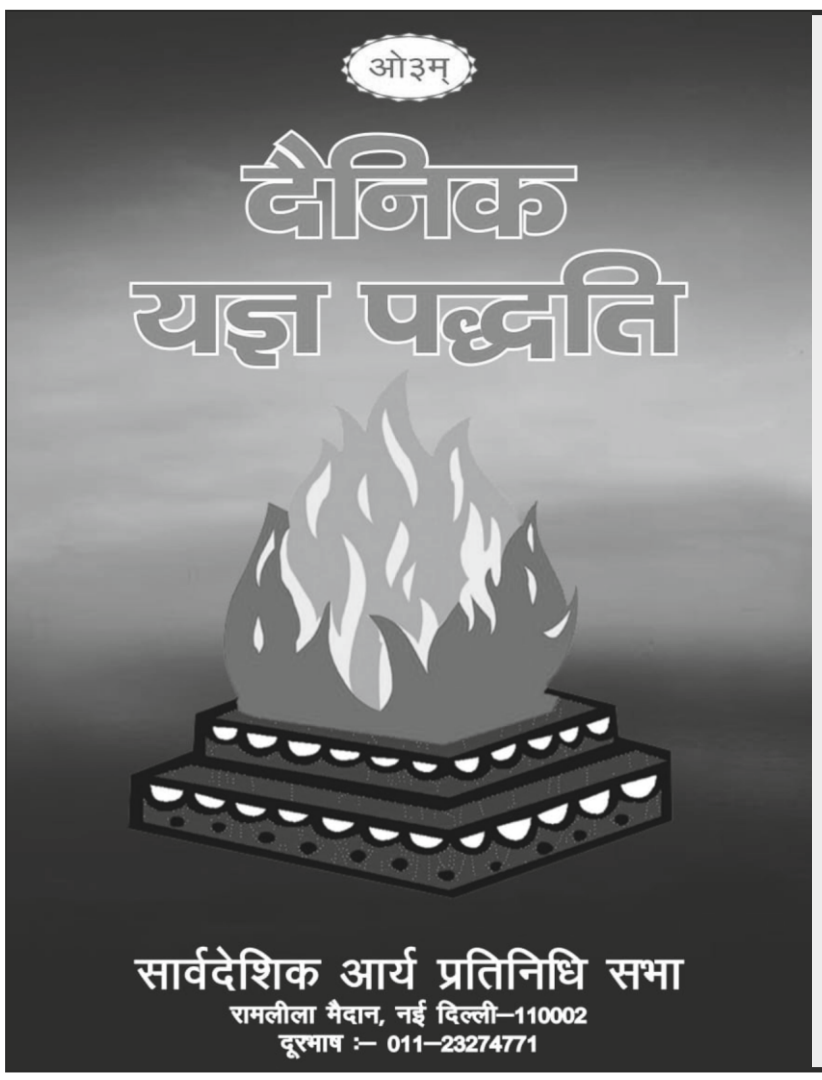

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

स्वाधीनता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द

— डॉ० धर्मपाल आर्य

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब के तलवन नामक गाँव में २३ फरवरी १८५७ को हुआ था। उनका पहला नाम बृहस्पति था, परन्तु बाद में उन्हें मुंशीराम कहा जाने लगा। १९१७ में संन्यास के बाद उनका नाम स्वामी श्रद्धानन्द हुआ। उनके पिता नानकचन्द थे। उनकी शिक्षा–दीक्षा बनारस और लाहौर में हुई। उनका विवाह श्रीमती शिवदेवी से हुआ जो ३५ वर्ष की अवस्था में अपने दो पुत्रों तथा दो पुत्रियों को छोड़कर चल बसी। मुंशीराम नायब तहसीलदार बने। उन्होंने इस नौकरी को छोड़कर फिल्लौर में और बाद में जालंधर में वकालत शुरू कर दी। यहां भी उनका मन नहीं लगा और वे स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज के क्षेत्र में प्रवृत्त हुए। उन्होंने ४ मार्च १९०२ को वैदिक ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप, राष्ट्र के लिए समर्पित नवयुवक तैयार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका से लौटकर महात्मा गांधी गुरुकुल कांगड़ी में आए। महात्मा मुंशीराम से उनका मेलजोल बढ़ा और वे भी देश को स्वाधीन कराने की राह पर चल पड़े। मोहनदास कर्मचन्द गांधी को उन्होंने महात्मा की उपाधि से विभूषित किया। १९१७ में वे संन्यासी हो गए। वे दिल्ली आकर रहने लगे, यहां उन्होंने दलितों और अनाथों के लिए संस्थाएँ बनायी। यहां से उर्दू में 'तेज' और हिन्दी में 'अर्जुन' नामक समाचार पत्र निकाला। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हड़तालों तथा धरना–प्रदर्शनों का आयोजन किया। रौलट एक्ट का विरोध किया। सैनिकों की संगीनों का छाती तानकर सामना किया। जामा मस्जिद से व्याख्यान देने वाले वे पहले और आखिरी हिन्दू थे।वे हिन्दुओं तथा मुसलमानों सभी के रहनुमा थे। उनका जीवन त्याग और तपस्या से परिपूर्ण था। उन्होंने २३ दिसम्बर १९२६ को अन्तिम साँस ली। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में ३० मार्च १९७० को एक डाक टिकट जारी किया था। शताब्दी वर्ष २००२ में भारत सरकार ने गुरुकुल कांगड़ी पर भी डाक टिकट जारी किया।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रयास से जलियांवाला बाग काण्ड के बाद अमृतसर में कांग्रेस का महाअधिवेशन हुआ था। उसमें कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता उपस्थित थे। पं० मोतीलाल नेहरू और महामना मदनमोहन मालवीय उस समय कांग्रेस के अग्रणी कार्यकर्त्ता थे। स्वामी श्रद्धानन्द उस समारोह के स्वागताध्यक्ष थे। स्वामी जी ने उस समय देशवासियों को चार परामर्श दिए थे–

१. केवल इतनी आवश्यकता है कि आर्य लोग अपने आचरण को उत्तम बनाकर दीपक बनें ताकि उनसे दूसरे दीपक जलाए जा सकें।

२. सभी प्रान्तों में मैंने देखा है कि हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे पर संदेह करने लगे हैं, किन्तु मुसलमान और सिख तो सामाजिक दृष्टि से संगठित हैं, किन्तु हिन्दू सामाजिक दृष्टि से बिखरे हुए हैं। मेरी सम्मति में इसका उपाय एक ही है कि हिन्दू नेता हिन्दू समाज को सामाजिक दृष्टि से संगठित करें और मुसलमान नेता खिलाफत की अपेक्षा स्वराज की प्राप्ति पर अधिक ध्यान दें।

३. यदि देश और जाति को देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्त्ति बनकर अपनी सन्तान में सदाचार की बुनियाद रखें। जब सदाचारी ब्रह्मचारी शिक्षक हों और कौमी हो शिक्षा पद्धति, तब ही कौम की जरूरत पूरी करने वाले नौजवान निकलेंगे, अन्यथा अपनी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनकर रहेगी।

४. ईसाई मुक्ति फौज भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील है, क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश सरकार के जहाज के लिए लंगर के समान हैं। आज से ये साढ़े छः करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे, बल्कि हमारे भाई–बहन हैं, हमारे पुत्र–पुत्रियाँ हैं– उन्हें मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करो, उन्हें पाठशालाओं में पढ़ाओं। उनके गृहस्थ नर–नारियों को अपने सामाजिक व्यवहार में सम्मिलित करो।''

स्वामी जी महाराज ने ये चार परामर्श दिए थे। ये भारतीयता की रक्षा के इतिहास में, भारतीय गौरव की पुनः स्थापना के इतिहास में तथा वैदिक धर्म के प्रसार के इतिहास में, प्रकाश–स्तम्भ के समान हैं, पहली बात में उन्होंने सम्पूर्ण आर्यजाति का आह्वान किया है कि वे दीपक के समान तेजस्वी हों। वे दीपक के समान मार्गदर्शक हों। वे दीपक के समान अपने आप को तिल–तिल करके होम कर देने वाले हों। निश्चय ही उनका अपना जीवन दीपक था। उन्होंने दूसरों को मार्ग दिखाया उन्होंने अपने आपको दीपक के समान जला दिया। उन्होंने देश और जाति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया। उन्होंने तो सर्वमेध यज्ञ किया था। वे प्रारम्भिक जीवन में क्या थे, सभी जानते हैं, पर आगे चलकर उन्होंने अपने आपको कितना आचारवान् बनाया, यह किसी से भी छिपा नहीं है। वे सार्वजनिक जीवन के व्यक्ति थे। सार्वजनिक व्यक्ति का कोई

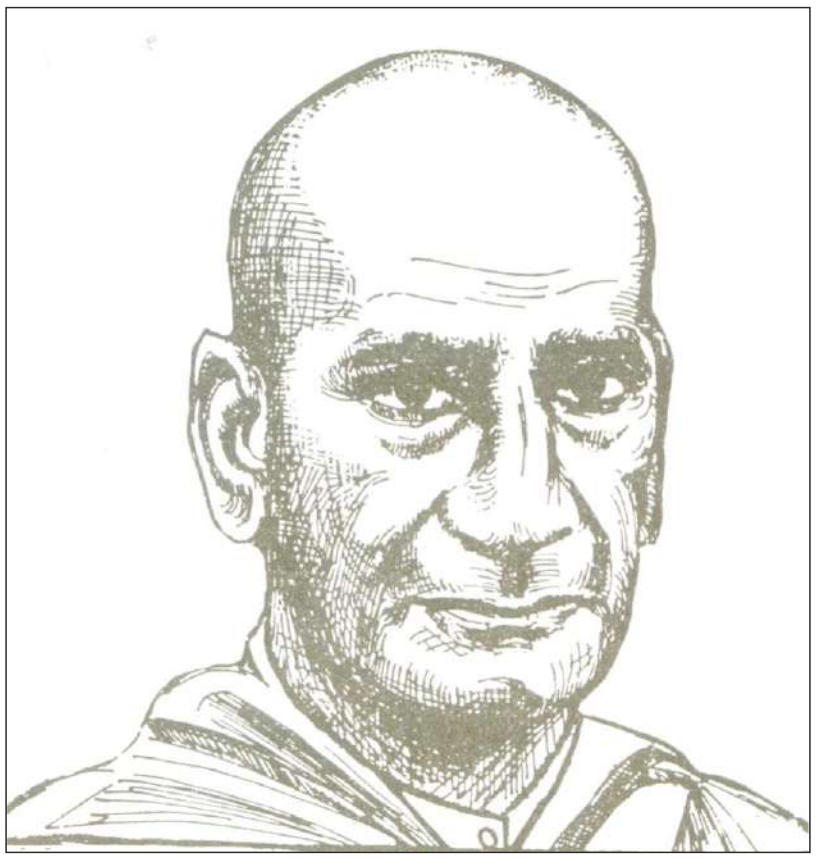

व्यक्तिगत जीवन नहीं होता। उसका तो एक–एक क्षण सबके सामने होता है। उसका कोई भी कार्य अपने लिए नहीं होता। उसके सभी कार्य दूसरों के लिए होते हैं। उसका जीवन स्वच्छ, दर्पण के समान आभासमान होता है। संस्थाओं के सर्वोच्च अधिकारियों को उनके जीवन से शिक्षाग्रहण करनी चाहिए। उन्हें सदाचारी बनना चाहिए। उन्हें प्रकाशस्तम्भ बनना चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने हिन्दू जाति के संगठन के बात कहीं है। यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। यदि हमें कुछ पाना है, अपने राष्ट्र का उद्धार करना है, अपनी जाति को प्रगति के संगठित होना ही होगा। संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्। यह नाद गुंजाना ही होगा। इसे क्रियान्वित करना ही होगा। आज मेरे अनेक भाई छोटे–छोटे विवादों में फंसे हैं। वे उस बृहद् उद्देश्य को भूल चुके हैं जो ऋषि ने हमें बताया था, जिस मार्ग पर स्वामी श्रद्धानन्द चले थे।

संगठनात्मक दृष्टि से आज भी सुदृढ़ता की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द एक शहीद की मौत मरे। हर किसी की कामना हो सकती है कि वह शहीद की मौत मरे, पर शहीद वही होता है जो किसी उद्देश्य के लिए अपने को न्योछावर करे। स्वामी श्रद्धानन्द ने उसी संगठनात्मक सुदृढ़ता और एकता के लिए अपने जीवन का बलिदान किया। वह तो वीर पुरुष थे। वे वीरता की ही मृत्यु को प्राप्त हुए। कायर लोग अपने जीवन में अनेक बार मरते हैं। वे जब भी डरेंगे, तभी मरेंगें, परन्तु बहादुर लोग अपने जीवन में केवल एक बार मृत्यु का वरण करते हैं। वे वीर बहादुर ही सदा याद किए जायेंगे, जो निर्भीक होंगे, अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होंगें। ऐ मेरे प्यारे आर्य भाइयो ! आप उठ जाओ, आगे बढ़ो, अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। अपने को देश और जाति पर बलिदान करने के लिए आगे आओ।

स्वामी जी ने अपनी संतान को सदाचारी बनाने की बात कहीं है। 'जनया दैव्यम् जनम्' यह वेद का आदेश है। स्वयं सदाचारी बनो, अपनी सन्तति को सदाचारी बनाओ। अपनी सन्तति को अपने से भी अच्छा बनाओ। पिता पुत्रात् पराजयेत् स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम में ऐसे ही वीरों के निर्माण की बात अपने मन में सोची थी। उनका सपना सच हुआ। गुरुकुल के सैकड़ों स्नातकों ने अपने–अपने क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। स्वामी श्रद्धानन्द अपने दोनों पुत्रों– हरिश्चन्द्र और इन्द्रचन्द्र को लेकर गंगा के किनारे बीहड़ जंगल में चले गये थे। वहीं पर उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा–पद्धति के अपने सपने को साकार किया। उन्होंने भारतीय इतिहास एवं दर्शन की उन्हें शिक्षा दी। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की उन्हें शिक्षा दी। सदाचार की उन्हें शिक्षा दी। उन्हें अपने देश पर बलिदान होने की शिक्षा दी। उन्हें वीरत्व एवं निर्भीकता प्रदान की। गुरुकुल का विद्यार्थी 'भय' करना नहीं जानता। वह तो साक्षात् 'वीरता' है। स्वामी श्रद्धानन्द तो कर्मशूर भी थे। उन्होंने जो कहा, वह करके दिखाया। वे केवल भाषण तक सीमित नहीं थे। आज के भाषणकर्त्ताओं का प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अन्तर होता है। असली प्रभाव उसी का पड़ता है जो जैसा कहता है वैसा ही करता भी है। सत्य का उपदेश करने वाले को सत्यवादी होना चाहिए। कर्म का उपदेश करने वाले को कर्मशील होना चाहिए। संयम का उपदेश करने वाले को संयमी होना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द में ये सभी गुण विद्यमान थे। आप अपनी सन्तान को सदाचारी बनाएं, उन्हें देश और जाति पर गर्व करने वाला बनाएं, उन्हें नित्य संध्या और अग्निहोत्र करने वाला बनाएं, उन्हें नित्य स्वाध्याय करने वाला बनाएं, तभी देश और जाति की रक्षा हो सकती है। आज के विषाक्त वातावरण में सदाचारी लोगों की आवश्यकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द का चौथा परामर्श वास्तव में एक चेतावनी है। धर्मान्तरण उस समय भी हो रहा था आज भी हो रहा है। देश के गरीब लोगों को ईसाई बनाया जा रहा था, आज भी बनाया जा रहा है। उन्हें आज मुसलमान भी बनाया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय में एक टीस थी। इसीलिए उन्होंने दलितोद्धार सभा बनायी। इसीलिए उन्होंने शुद्धि सभा बनाई। वे नहीं चाहते थे कि धर्मान्तरण हो। आर्य समाज ने धर्म रक्षा महाभियान चलाया। आर्य समाज ने समझाया कि वैदिक धर्म की सर्वश्रेष्ठ धर्म है। दलितोद्धार का मूल मंत्र है कि सभी को समानता का अधिकार दिया जाए। सभी जगह समता सम्मेलन आयोजित किए जाएं। जब सभी को समान सम्मान मिलेगा, ऊँच–नीच का भेद समाप्त हो जाएगा, जातीयता का भेद समाप्त हो जाएगा, सभी को समान अवसर मिलेंगे तो स्वतः ही धर्मान्तरण का चलन समाप्त हो जायेगा। इस कार्यक्रम को वास्तविक व्यवहार में लाने की आज भी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि स्वामी श्रद्धानन्द के समय थी।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाने की सार्थकता इसी बात में है कि भारतवासी उनके सच्चे अनुयायी बनें। अपनी सन्तान को आर्य बनायें, सभी को गले लगाएं, अपनी भाषा का प्रयोग करें, मद्यादि व्यसनों से दूर रहें तथा गोरक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हों।

–ए/एच-१६, शालीमार बाग, दिल्ली-११००८८
दूरभाषः ०११-२७४७२०१४, २७४७१७७६

शिक्षा में हिन्दी के प्रस्तोता : स्वामी श्रद्धानन्द

– पं. प्रकाशवीर शास्त्री

हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह चल रहा था। गांधी जी भी उसमें भाग लेने पधारे। आए थे यह सोचकर कि जो विश्वविद्यालय काशी में हैं वहां तो हिन्दी और संस्कृत का बोलबाला होगा ही। पर जब गांधी जी ने चारों ओर वहां अंग्रेजी का साम्राज्य देखा तो तिलमिला उठे। विश्वविद्यालय के संस्थापक मालवीय जी को देखकर बोले, 'महामना! यह बच्चे तो गंगा किनारे बैठकर टेम्स का पानी पी रहे है।' अपने इसी भाषण में गांधी जी ने कहा–लोग मुझे महात्मा कहते हैं पर मैं महात्मा नहीं हूँ। महात्मा तो आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द हैं जो गंगा के किनारे हरिद्धार में बैठकर हिन्दी के माध्यम से गुरुकुल के विद्यार्थियों को शिक्षा दे रहे हैं।

स्वाधीन भारत में अभी तक भी अंग्रेजी हवाओं में पले कुछ लोग यह कहते मिलेंगे– जब तक विज्ञान तकनीकी ग्रन्थ हिन्दी में न हों तब तब कैसे हिन्दी में उच्च शिक्षा दी जाये। जबकि स्वामी श्रद्धानन्द स्वाधीनता से भी चालीस साल पहले गुरुकुल कांगड़ी में हिन्दी के माध्यम से विज्ञान जैसे गहन विषयों की शिक्षा दे रहे थे। ग्रन्थ भी हिन्दी में थे और पढ़ाने वाले भी हिन्दी के थे। जहां चाह होती है वहीं राह निकलती है। एक लम्बे अरसे तक अंग्रेज गुरुकुल कांगड़ी को भी राष्ट्रीय आन्दोलन का अभिन्न अंग मानते रहे। इसमें कोई सन्देह भी नहीं गुरुकुल के स्नातकों में स्वाधीनता की अजीब तड़प थी। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे राष्ट्रीय नेता जिस गुरुकुल के संस्थापक हो और हिन्दी शिक्षा का माध्यम हो वहां राष्ट्रीयता नहीं पनपेगी तो कहां पनपेगी। स्वामी जी से मिलने देश के प्रमुख नेता भी गुरुकुल आते रहे थे। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद जब मोहनदास कर्मचन्द गांधी पहली बार गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव में पधारे तब स्वामी श्रद्धानन्द ने ही उन्हें महात्मा की उपाधि प्रदान की। तब से ही गांधी जी महात्मा गांधी कहलाने लगे।

राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के मंच पर भी प्रारम्भ में तो तीन–चार दशाब्दियों तक अंग्रेजी का ही दबदबा रहा। भाषण–प्रस्ताव और चर्चाओं में अंग्रेजी छाई रहती थी। पर जब १९१९ में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन हुआ और स्वामी श्रद्धानन्द उसके स्वागताध्यक्ष बनाये गए तब पहली बार कांग्रेस के मंच पर हिन्दी सुनने को मिली। स्वामी जी ने वेद मन्त्र पढ़कर जब अपना भाषण हिन्दी में दिया तब वहां बैठे किसी नेता ने कहा– आज लगता है हम भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में बैठे हैं। कांग्रेस अधिवेशन से पहले अमृतसर के जलियांवाला बाग में ऐतिहासिक नरमेध होकर चुका था जिसकी याद भी आज रोंगटे खड़े कर देती है। लोगबाग इतने डरे हुए थे कि कोई हिम्मत कर के तैयारियों में आगे लगने को उद्यत नहीं हो रहा था। सब ने आखिर में एक स्वर में यह तय किया– स्वामी श्रद्धानन्द यदि इस अधिवेशन की बागडोर अपने हाथों में ले लें तब ही बात बन सकती है। अमृतसर कांग्रेस के चार वर्ष बाद स्वामी जी अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी निर्वाचित हुए।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी स्वामी जी का अमर स्मारक है। प्रारम्भ में जब उन्होंने हरिद्वार में गंगा के किनारे पर गुरुकुल की नींव डाली तो अधिकांश व्यक्ति स्वामी जी के प्रयास की सफलता में संदेह कर रहे थे। कुछ तो कहते थे– भला कौन अपने बालकों को इन जंगलों में लाकर साधु बनाएगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का वेश भी उन दिनों कुछ ऐसा ही था। सबको वहां नंगे पैर, नंगे सिर रहना पड़ता था और पीले खद्दर के कपड़े पहनना अनिवार्य था पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सबसे पहले अपने ही दो पुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में ब्रह्मचारी बनाया। आगे चलकर वह ही पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति दिल्ली के सुप्रसिद्ध पत्रकार और राजनीतिकनेता बने। हरिश्चन्द्र जी स्नातक बनने के कुछ दिन बाद विदेशों में स्वाधीनता की अलख जगाने चले गए।

एक ऐसा भी समय रहा जब लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, चौधरी रामभजदत्त और श्री घनश्याम सिंह गुप्त आदि आर्य समाज के नेता राष्ट्रीय आन्दोलन के मंच पर भी वैसे ही सक्रिय थे जैसे आर्यसमाज में। उन दिनों स्वातन्त्र्य संघर्ष व आर्यसमाज का संगठन द्वितीय रक्षा पंक्ति का काम कर रहा था। समाज सुधार के साथ–साथ राजनीतिक चेतना जगाने में आर्यसमाज के नेताओं का योगदान आसानी से नहीं भुलाया जा सकेगा। हिन्दी, हरिजन समस्या का समाधान और खादी तीनों के लिए आर्यसमाज अर्पित सा हो गया था। मालवीय जी कट्टर सनातनधर्मी थे और स्वामी जी कट्टर आर्यसमाजी। लेकिन राजनीतिक और सामाजिक सुधारों में दोनों एक थे। हिन्दू समाज को रूढ़ियों से उबार कर एक सशक्त समाज बनाने की उनकी कल्पना थी। प्रारम्भ में गांधीजी के साथ कई प्रश्नों पर उन दोनों का मतभेद भी रहा। पर बाद में गांधी जी को जब उन्होंने सारी स्थिति समझाई और अन्य स्रोतों से भी गांधी जी ने उसकी वास्तविकता की जानकारी ली तो स्वामी जी की दूरदर्शिता के कायल हो गए। दिल्ली में जब स्वामी जी का बलिदान हुआ तब गोहाटी में उसी समय अखिल भारतीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन चल रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु का समाचार सुनते ही अधिवेशन स्थगित कर दिया गया। शोक प्रस्ताव पर बोलते हुए अपने भाषण में गांधी जी ने कहा था– काश! यह शानदार मौत मुझे भी मिली होती।

समाज सुधार आन्दोलन को भी इस निर्भीक संन्यासी से नई दिशा मिली। हरिजन समस्या के समाधान में तो कई स्थानों पर संघर्ष का भी सामना करना पड़ा। गुरुकुल कांगड़ी के छात्रावासों और भोजनालयों में बिना किसी भेदभाव के हर जाति के विद्यार्थी रहते और खाते–पीते थे।

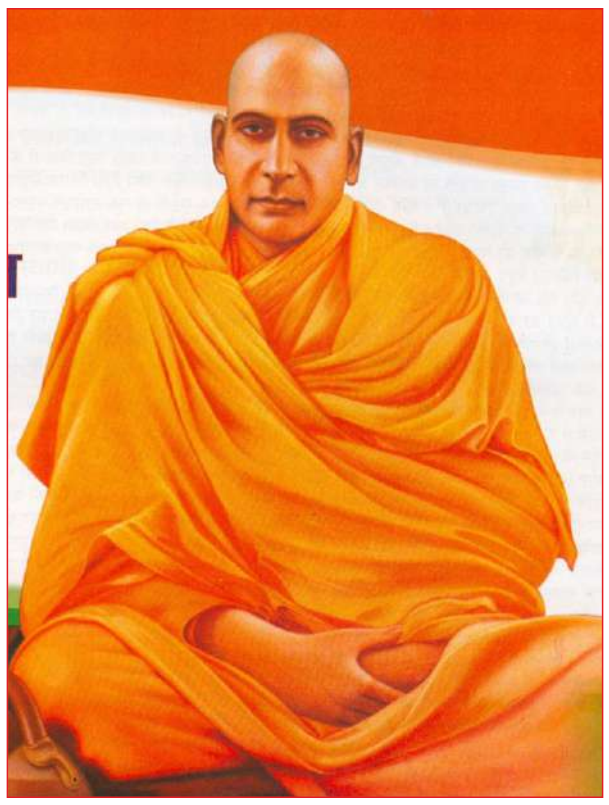

स्वामी जी का कहना था मनों में छुआछूत की भावना मिटाने में आवासीय शिक्षण संस्थाओं का अच्छा योगदान रह सकता है। चौबीसों घंटे एक साथ मिलकर जब वह रहेंगे, खेलेंगे–कूदेंगे और पढ़ेंगे–लिखेंगे तो कहां तक छूत–अछूत की दीवार खड़ी रह जाएगी। आजादी के बाद भी यदि इसी रास्ते को पकड़ा गया होता तो मंजिल बहुत पहले तय हो जाती। आवासीय पद्धति पर आश्रित ऐसे गुरुकुल उन्होंने हरियाणा में इन्द्रप्रस्थ और कुरुक्षेत्र, गुजरात में सोनगढ़ और सूपा में भी खोले। देहरादून का कन्या गुरुकुल भी उसी शृंखला की कड़ी है।

सदियों की दासता के बाद रूढ़ियों का शिकार हिन्दू समाज कुछ समय तक तो बिल्कुल ही छुई–मुई बन गया था। किसी हरिजन से सवर्ण हिन्दू का स्पर्श हो गया तो बिरादरी से बाहर। किसी हरिजन के कुएँ से किसी सवर्ण हिन्दू ने पानी पी लिया तो बिरादरी से बाहर। किसी की चारपाई पर भूल से कोई बैठ गया तो बिरादरी से बाहर। बंगाल में तो किसी मुस्लिम नवाब के दरबार में नाक तक में भोजन की गन्ध जाने से ही 'घ्राणं अर्ध भोजनम्' सूंघना भी आधा भोजन होता है, की व्यवस्था देकर एक कुलीन और सम्भ्रान्त परिवार को जातिच्युत कर दिया गया। बाद में उसी की शाखा–प्रशाखायें जहां–तहां निकल–निकल कर पूरे बंगाल में फैल गई। उसकी परिणति किस रूप में १९४७ में हुई इसकी विस्तार से यहां चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दू समाज की इस कमजोरी को भी सहारा दिया। जो व्यक्ति अथवा परिवार हिन्दू समाज की इस संकुचित भावना का शिकार हो गये थे उनको समाज में फिर से वह ही पुराना सम्मानित स्थान देकर अपने उदार हृदय और दूरदर्शिता का परिचय दिया। कुछ लोग जो हिन्दू समाज की इस कमजोरी का लाभ उठा रहे थे उन्हें तो इससे ठेस पहुँचनी स्वाभाविक थी। अली बन्धुओं को आगे करके गांधी जी से इसकी शिकायत भी की गई। पर स्वामी जी ने गांधी जी से स्पष्ट कह दिया– ''स्वाधीनता के आन्दोलन को मेरे इस व्यवहार से कुछ भी क्षति पहुँचती है तो मुझे आप छोड़ दें। लेकिन जो लोग स्वयं तो तबलीग की बातें करें और हरिजनों को हिन्दू–मुसलमानों में आधा–आधा बांटने का सुझाव दें और मुझे अपने ही भाइयों को गले लगाने से रोकें यह श्रद्धानन्द के लिए संभव नहीं है। मैं तो राष्ट्र की एकता का ही एक आवश्यक भाग उसे मानता हूँ।''

राष्ट्रीय मुसलमानों का एक वर्ग जो स्वामी जी को निकट से जानता था वह उन हलकी बातों से कभी प्रभावित नहीं हुआ। हकीम अजमल खां, डाक्टर अन्सारी और दिल्ली के दूसरे इसी तरह के राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में दिल्ली में कन्धे से कन्धा लगाकर आजादी का आन्दोलन चला रहे थे। तीस मार्च का वह दिन जब दिल्ली में चांदनी चौक के घंटाघर पर स्वामी जी आजादी के दीवानों का एक विशाल जुलूस लेकर जा रहे थे, हिन्दू–मुसलमान सभी उसमें शामिल थे। लालकिले की ओर अंग्रेजों की सैनिक टुकड़ी रास्ता रोके खड़ी थी और फतेहपुरी की ओर से समुद्र की तरह ठाठें मारता हुआ यह जुलूस आगे बढ़ रहा था। घंटाघर पर सैनिकों ने जुलूस को रोकने के लिए इधर अपनी संगीनें संभाल लीं। उधर स्वामी जी ने अपनी कमीज के बटन खोलकर सीना तान लिया और कहा–हिम्मत है तो चलाओं गोली। स्वामी जी की इस निर्भीकता पर सेना के जवान हक्के–बक्के रह गये और करें तो क्या करें। जुलूस के लोग भी स्वामी जी के इस दृढ़ निश्चय पर आज कुछ कर गुजरने को आमादा थे। उनका कहना था– स्वामी जी को गोली तो बहुत दूर की बात है किसी ने हाथ भी लगा दिया तो आज यहां लाशें बिछ जाएंगी। अब तो उस दृश्य की कल्पना करना ही कठिन है। आखिर में फिर अंग्रेज अधिकारी को सद्बुद्धि आ गई और सिपाहियों को अपनी बन्दूकें नीची करनी पड़ीं।

बरसों तक स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली के बेताज बादशाह माने जाते थे। उनके संकेत दिल्ली वालों के लिए आदेश का काम करते थे। दिल्ली में चार अप्रैल का वह दिन भी एक ऐतिहासिक दिन ही था जब दिल्ली की जामा मस्जिद के तख्त पर खड़े होकर स्वामी जी ने भाषण दिया। 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो!'' यह वेद मन्त्र पढ़कर स्वामी जी ने अपनी सिंह गर्जना की तो घन्टों तक टकटकी लगाये लोग स्वामी जी का भाषण सुनते रहे। स्वामी जी पहले गैर मुस्लिम थे जिन्हें मुसलमानों ने यह सम्मान दिया। संन्यास लेने के बाद तो उनका रुतबा इतना ऊँचा उठ गया था जो कहीं उनके कदम पड़ने को भी धन्य माना जाता था। स्वामी जी को हिन्दू– मुसलमान दोनों अपना रहनुमा मानते थे। दोनों ही उनका पैगाम सुनने को उतावले रहते थे। पर उसी दिल्ली में एक पागल मुसलमान ने स्वामी जी जब निमोनिया से बीमार थे तो पिस्तौल दागकर उन्हें शहीद कर दिया। स्वामी जी से कुछ प्रश्न पूछने को वह गया था। उनके सेवक को 'मुझे प्यास लगी है' यह कह कर बाहर पानी लेने उसने भेज दिया। मौके का लाभ उठाकर रुग्ण संन्यासी की छाती उस पागल ने गोलियों से छलनी कर डाली। कुछलोग इस बलिदान का लाभ उठाकर दिल्ली में साम्प्रदायिक हवा फैलाना चाहते थे। पर दिल्ली वालों ने उस समय बड़ी समझदारी और धैर्य से काम लिया। दिल्ली के इतिहास में दो अभागे दिन ऐसे आये हैं जब पारस्परिक सद्भाव और धैर्य की कठोर परीक्षा दिल्ली के नागरिकों ने दी है। एक दिन वह जब स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हुआ और दूसरा दिन जब महात्मा गांधी का बलिदान हुआ। इसमें बदला लेने की हल्की–सी चिन्गारी भी रुई में आग का काम कर सकती थी। पर जिस महान् लक्ष्य को लेकर वह दोनों चले थे उसके सर्वथा विपरीत वह बात हो जाती। यों भी महापुरुषों का तप और त्याग उनके पीछे वातावरण को संभालने में बड़ी मदद करता है। हिंदू–मुसलमान दोनों के हृदयों पर उनकी राष्ट्रीय सेवाओं की छाप थी उससे वह सदा–सदा के लिए अमर हो गए।

स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महावीर

संस्कृत के नीतिकारों ने महात्माओं और दुरात्माओं का अन्तर निरूपित करते हुए कहा है-

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।

मनस्यन्त् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।।

अर्थात् मन, वचन और कर्म में एकता महात्माओं की पहचान है तो मन, वचन, कर्म में भिन्नता दुरात्माओं का लक्षण है। इस कसौटी पर कस कर देखें तो युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द और स्वयं को ऋषि का शिष्य कहने में गर्व अनुभव करने वाले और उनकी प्रेरणा से ही कुपथ से निकलकर सुपथ पर चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द अनुपम और अद्वितीय थे। देव दयानन्द ने न जाने कितनी पतित आत्माओं का उद्धार किया और उन्हें इतिहास में स्मरणीय बनाया, इसकी गिनती करना कठिन है। अपने आचार्य के इस स्वरूप को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था-

''ऋषिवर, तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे अब (सन् 1925 में) 42 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदयपटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी ही बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी ही आत्माओं की काया पलट की, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है। परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशकों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया, परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन-लाभ करने योग्य बनाया। भगवान् मैं तुम्हारा ऋणी हूँ। मुझे अपना सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।''

स्वामी श्रद्धानन्द की कथनी और करनी में कैसी एकरूपता थी, इसके अनेक उदाहरण उनके जीवन से दिये जा सकते हैं।

मानवता, सात्विकता, समर्पण, त्याग, सेवा के साकार स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहु-आयामी था। हिमालय के चरणों में भगवती भागीरथी के पावन तट पर गुरुकुल कांगड़ी में वैदिक ज्ञान का अक्षय वट वृक्ष लगाने वाले इस महान् संन्यासी ने भारत के स्वातन्त्र्य समर में भी महान् सेनापति की भूमिका सफलतापूर्वक निभाई थी।

सत्याग्रह और अहिंसा के बलपर देश को स्वतन्त्र करने का महान् संकल्प लेकर अपना जीवन समर्पित कर देने वाले महात्मा गांधी के साथ महात्मा मुंशीराम का अटूट प्रेम का सम्बन्ध था। महात्मा गांधी को 'महात्मा' के सम्बोधन से सर्वप्रथम सम्बोधित करने वाले महात्मा मुंशीराम ही थे। उसके बाद तो महात्मा गांधी के साथ 'महात्मा' शब्द ऐसे चस्पा हो गया जैसे कि वह 'गांधी' का पर्यायवाची ही हो। महात्मा गांधी उनको हमेशा अपने बड़े भाई का सा आदर देते थे। जब गांधी जी पहली बार दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे तो अपने आश्रमवासी छात्रों के साथ सीधे गुरुकुल कांगड़ी ही पहुंचे थे और वहां जाकर उन्होंने महात्मा मुंशीराम का चरण स्पर्श किया।

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम जहां गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के कारण विश्व इतिहास में अमर है, वहां स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास भी स्वामी जी के योगदान की चर्चा के बिना अधूरा है। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने प्रवासी भारतीयों के अधिकारों के प्राप्ति के लिए सत्याग्रह प्रारम्भ किया और आर्थिक सहयोग की अपील की। इस अपील पर स्वर्गीय गोखले चन्दा एकत्र करने के काम में लग गये। गांधी जी की अपील का गुरुकुलवासियों पर इतना प्रभाव पड़ा कि ब्रह्मचारियों एवं अध्यापकों ने अपने भोजन में कमी करके इससे होने वाली आय के अतिरिक्त हरिद्वार के समीप बनने वाले 'दूधिया बांध' पर पत्थर तोड़ने और मिट्टी डालने की मजदूरी करके पन्द्रह सौ रुपया श्री गोखले के पास भेज दिया। इस सम्बन्ध में श्री गोखले ने 27 नवम्बर, 1913 को महात्मा मुंशीराम को जो पत्र लिखा था वह पठनीय है-

''मुझे रेवरेण्ड एण्ड्रूज और पंडित हरिश्चन्द्र ने बताया कि किस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारी दक्षिण अफ्रीका के लिए घी-दूध छोड़कर और साधारण कुलियों और मजदूरों की तरह मजदूरी करके रुपया इकट्ठा कर रहे हैं। दिल हिलाने वाले इस देशभक्तिपूर्ण कार्य के लिए मैं उनको क्या धन्यवाद दूं। यह तो उनका वैसे ही अपना काम है, जैसा कि आपका और मेरा काम है। वे इस प्रकार भारत माता के प्रति अपने ढंग से कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। फिर भी भारतमाता की सेवा के लिए त्याग और श्रद्धा का जो आदर्श उन्होंने देश के युवकों तथा वृद्धों के सामने उपस्थित किया है, उसकी अन्तःकरण से प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता।''

20 मार्च सन् 1919 को अहमदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दिये गये ऐतिहासिक भाषण को सुनकर वायसराय चैम्सफोर्ड घबरा गये।

'मार्शल ला' से भयभीत कराहते हुए पंजाब को देखकर भी वीर संन्यासी का हृदय शांत न रह सका। प्रेम और सहानुभूति के 'फाहे' को उनके जरकी हृदय पर रखने के लिए 1919 के कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में इस संन्यासी ने अपने आर्यत्व का संदेश दिया था।

जलियावाला काण्ड के पश्चात् क्षत-विक्षत पंजाब अत्याचारों की पीड़ित वेदना से आहत हो चुका था। कोई साहस नहीं कर पा रहा था कि पंजाब की धरती पर पुनः स्वतन्त्रता की मशाल जला सके, ऐसे में प्रभु-भक्त स्वामी श्रद्धानन्द ही सामने आये और निर्भीकता के साथ वेदमन्त्रोच्चारण पूर्वक राष्ट्र-भाषा हिन्दी में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में ऐतिहासिक भाषण दिया।

इस भाषण के सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने कहा था ''श्रद्धानन्द का भाषण उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक बनी हुई थी।

सन् 1919 का वर्ष स्वामी जी के जीवन-इतिहास का एक अद्वितीय वर्ष था। 30 मार्च का दिन दिल्ली की प्रत्येक दुकान और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में सर्वत्र सन्नाटा और शांति। यह शांति मरघट की शांति न होकर स्वदेश प्रेम की अनुपम शालीनता धारण किए हुए थी। स्वामी जी के नेतृत्व में एक विशाल परन्तु शांत जलूस चांदनी चौक में निकला जब वह जुलूस घंटाघर पर पहुंचा तो कुछ गोरखा सिपाहियों ने हवाई फायर किये। स्वामी जी गोरखा सिपाहियों की ओर बढ़े, हवाई फायरिंग का कारण पूछा। परन्तु कुछ सिपाहियों ने आगे बढ़कर अपनी बन्दूकों का मुख स्वामी जी की ओर कर दिया। तब उस

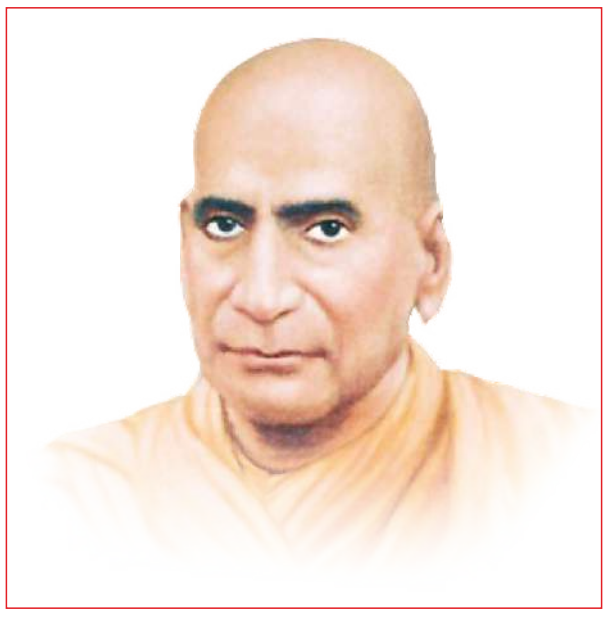

वीर, निर्भीक, देश-प्रेमी आर्य संन्यासी ने अपने सीने से वस्त्र हटाकर सिंह गर्जना करते हुए कहा था- 'लो मैं खड़ा हूँ, मारो गोली। अहा! यह दृश्य कितना आकर्षक था, कितना वीरतापूर्ण था। स्वामी जी उमड़ते हुए जन-समुद्र को अपने नेतृत्व में चांदनी चौक में से ले जा रहे थे, तो ठीक घंटाघर पर ब्रिटिश सिक्कों पर पलने वाले कुछ भारतीय सैनिकों ने उस आदर्श राष्ट्र-प्रेमी वीर विनायक को रोकना चाहा। जब वे उनकी हवाई फायरिंग की परवाह न करते हुए सिंह समान अपने मार्ग पर बढ़े जा रहे थे, तो ठीक घंटाघर पर कुछ सैनिकों की चमचमाती संगीनें लोगों की ओर निकल पड़ी। स्वामी जी ने गरजते हुए कहा- 'जनता पर गोली चलाने से पूर्व मेरी छाती में गोली मारो।'

स्वामी जी के निर्भीक व्यक्तित्व ने संजीवनी औषधि का कार्य किया और दिल्लीवासियों ने धर्म और जाति के भेद-भाव के बिना उन्हें नवचेतना का मसीहा मान लिया। राजनीति के क्षेत्र में स्वामी जी का पहला चरण इतना सशक्त था, जिसने सबको चमत्कृत कर दिया था।

हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर

स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। वे हम एक हैं की व्याख्या 'ह' से हिन्दू और 'म' से मुस्लिम किया करते थे। वे व्याख्यान देकर नहीं अपितु प्रत्यक्ष आचरण द्वारा एकता स्थापित करना चाहते थे।

4 अप्रैल के दिन दोपहर बाद की नमाज के पीछे विश्व की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में मुसलमानों का जलसा हो रहा था। भीड़ में से मौलाना अब्दुल्ला चूड़ीवाले ने अचानक आवाज देकर कहा- ''स्वामी श्रद्धानन्द की तकरीर भी होनी चाहिए। दो-तीन उत्साही युवक उठे और स्वामी जी को नये बाजार के निवास से लाए। अल्ला हो अकबर के नारों के साथ स्वामी जी मस्जिद के मिम्बर (बेदी) पर विराजमान हुए। स्वामी जी ने 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे।' इस वेद मन्त्र से प्रारम्भ कर 'ओं शांतिः शांतिः शांतिः' कहकर व्याख्यान समाप्त किया। विश्व के इतिहास में यह पहला अवसर था। जब किसी गैर मुस्लिम ने दिल्ली की जामा-मस्जिद में खड़े होकर इस प्रकार वेदोपदेश दिया हो। इस घटना से वे धर्म और जाति की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव से महामानव और अजातशत्रु बन गये थे।

वे सच्ची धर्म निरपेक्षता के समर्थक थे। आपने एक बार लिखा था कि भिन्न-भिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय भी देश में राजनैतिक और सामाजिक एकता उत्पन्न करने में बाधक नहीं हो सकते और इकत्तीस करोड़ भारतवासी देश में सच्ची राष्ट्रीयता स्थापित कर सकते हैं। सनातन धर्मी, आर्यसमाजी, ब्राह्म, जैन, बौद्ध, पारसी, मुसलमान, ईसाई और यहूदी आदि सब अपने ढंग से पूजापाठ करते हुए भी भारतमाता की पूजा में एक होकर भ्रातृवाद का संगठन पैदा कर सकते हैं।

दलितोद्धारक

स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील थे। हिन्दू समाज से अछूत जातियों को अलग करके उसको दो टुकड़ों में बांट देने की सरकार की जिस मूढ़ योजना को महात्मा गांधी सन् 1931 में दूसरी गोलमेज सभा में समझ पाये थे, स्वामी जी ने अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के भाषण में सन् 1919 में ही इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा था- लन्दन में भारत की रिफार्म स्कीम-कमेटी के सामने ईसाई मुक्ति फौज के बूथ टकर साहब ने कहा है कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिए क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर है। इस वाक्य के कूटनीतिक अर्थ को स्पष्ट करके उन्होंने कहा था- आज से वे साढ़े छः करोड़ हमारे अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनके पुत्र और पुत्रियां हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे।

अहमदाबाद में जून 1924 में होने वाले ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर आपने महात्मा गांधी को भेजे तार में कहा था- कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तीय हिन्दू सभासदों को, जो नौकर रख सकते हैं, कहा जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखें, उनमें एक नौकर अवश्य अछूतों में से ही हो। जो ऐसा न कर सके, वह कांग्रेस के अधिकारी न रहे। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से दलितोद्धार सभा बनाई और उनका उद्धार करना प्रारम्भ किया।

व्यावहारिक दृष्टिकोण

स्वामी जी का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यावहारिक था। सन् 1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी ने तीन माह में स्वराज्य-प्राप्ति का लक्ष्य रखा तो आपने स्पष्ट कहा कि इस अवधि में स्वराज्य तो मिलेगा नहीं और उसकी प्रतिक्रिया बहुत बुरी होगी। सन् 1921 तक स्वराज्य न मिलने पर महात्मा गांधी हिमालय चले जाने की बात कहने लगे तो स्वामी जी ने ही उन्हें इस प्रकार की बात कहने से रोका। कोरे सत्याग्रह से स्वराज्य प्राप्ति में आपका किञ्चिन्मात्र विश्वास नहीं था। आप कहा करते थे कि स्वराज्य की प्राप्ति तो भूकम्प के समान किसी अनहोनी घटना से ही होगी। ये विचार आपने कांग्रेस की सत्याग्रह जांच कमेटी के सामने 14 अगस्त 1922 को साक्षी देते हुए कहे थे।

स्वामी जी के मन में देश की स्वतन्त्रता की कितनी ललक थी। यह उनके 25 सितम्बर 1920 को प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी को लिखे पत्र से प्रकट होती है। वे लिखते हैं- इस समय मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है, यदि यह आन्दोलन अकृत कार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिले तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। इसलिए मैं इस काम में शीघ्र ही लग जाऊँगा।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का यह महान् योद्धा, भारतीय संस्कृति, शिक्षा, परम्परा का रक्षक, आदर्श सुधारक, आदर्श आचार्य जीवन के अन्तिम क्षण तक स्वयं को समर्पित करता रहा। एक धर्मान्ध मुसलमान की तीन गोलियों को अपने सीने पर झेलकर यह आदर्श कर्मयोगी, दीन-दलितों का उद्धारक, ईश्वर प्रेम में पगा प्यारा, श्रद्धा की साक्षात् प्रतिमा स्वामी श्रद्धानन्द पहले ही सर्वमेघ यज्ञ का उत्कृष्ट यजमान बन अपना मन और धन गुरुकुल के भेंट कर चुके थे, अब सर्वहूत यज्ञ करके तन को भी भेंट चढ़ा दिया।

उनकी मृत्यु का समाचार सुन 'बड़े भाई' की मौत पर 'छोटे भाई' के मुख से निकला- 'शानदार जीवन का शानदार अन्त' महात्मा गांधी ने केवल ये शब्द ही नहीं कहे, अपितु 'यंग इण्डिया' में उनकी लेखनी भी चार-चार आंसू बहाये बिना न रूक सकी। गांधी जी ने लिखा- 'स्वामी जी एक सुधारक थे वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग-शय्या पर नहीं किन्तु रणांङ्गण में मरना पसन्द करते हैं। वे वीर के समान जीये और वीर के समान मरे।

- प्रोफेसर एवं निदेशक
श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान, हरिद्वार

बालक मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त

बनारस में बालक मुंशीराम का शैशव और किशोरावस्था पिता के लाड़-प्यार में बीता। पुलिस में पिता हों तो बच्चे को क्या कमी? संग-कुसंग स्वाभाविक था। उन्हीं दिनों वहां एक ऐतिहासिक घटना घटी स्वामी दयानन्द सरस्वती का काशी आगमन और पौराणिक पंडितों से शास्त्रार्थ। काशी हिल उठी। वैदिक सूर्य की किरणों से मन का तमस दूर हो रहा था। फिर भी स्वार्थी तत्वों ने अफवाहों का बाजार गर्म किया। ''कानफुसिया संचार माध्यम'' ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को एक जादूगर की संज्ञा दी। ऐसा जादूगर जो बालकों को पकड़ ले जाता है। स्पष्ट है कि युवा पीढ़ी प्रभावित हो रही थी नवीन वैदिक विचारधारा से। दुष्प्रचार किया गया कि दयानन्द सरस्वती ''जादू की मशाल'' लेकर चलते हैं'' तमसो मा ज्योतिर्गमय'' का अनर्थ किया अनार्यों ने। बालक मुंशीराम को उन दिनों घर से बाहर नहीं निकलने दिया कि कहीं वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रभाव में न आ जायें। पिता नानकचन्द चीन की दीवार समान संन्यासी और मचलते मन मुंशीराम के मध्य अचल रहे।

अनेक वर्षों बाद, उन्हीं जादूगर संन्यासी- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बरेली के शहर कोतवाल नानकचन्द के पुत्र, 23 वर्षीय मुंशीराम को पतन पथ से बचाया, प्रगति पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। उनका मन पढ़ने में लगा, वे मुख्तार-वकील बनें, कल्याण पथ के पथिक बने। अंततः आर्य जगत को मिला एक देदीप्यमान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती।

चलिए लौट चलें बरेली। वर्ष है 1879 ईसवी। स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेद प्रवचन की धूम है, चर्चा घर-घर में है। श्रोता स्वदेशी और विदेशी है, भारतीय हैं और है फिरंगीः कलेक्टर और कमिश्नर। नानकचन्द जी पर शहर कोतवाल होने के नाते पुलिस प्रबन्ध का दायित्व है। वे वेद प्रवचन से प्रभावित हुए किन्तु मूर्तिपूजा खण्डन से क्षुब्ध। सत्य विद्या के प्रतिपादन को उन्होंने हरि निन्दा माना और कहा ''हरिहर निन्दा सुनई जो काना, होई पाप गोघात समाना'', फिर भी पुत्र मुंशीराम को प्रेरित किया कि वह बेगम बाग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का सत्संग करे और टाउन हॉल में प्रवचन सुने। पिता को पूरी आशा थी कि पुत्र को सुधार लेंगे स्वामी जी। उसे नास्तिक से आस्तिक बना लेंगे। आशा निराधार न थी, निराशा न बनी।

नास्तिक नवयुवक मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रवचन सुने, उनकी दिनचर्या को निकट से देखा, ब्रह्म मुहूर्त में भ्रमण में साथ हो लिए किन्तु कदम से कदम न मिला सकने पर पिछड़ गये। ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी प्रश्न व उत्तर की श्रृंखला चलती रही। ''ओ३म्'' पर स्वामी जी का व्याख्यान सुनकर नवयुवक को आत्मिक आनन्द की अनुभूति हुई थी। फिर भी मन में द्वन्द्व होता रहा, बावजूद इसके कि स्वामी जी की विद्वता से, उनके तर्क से वे निरूतर हो जाते थे। युवा मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से कहा ''महाराज आपकी तर्कण शक्ति बड़ी तीक्ष्ण है। आपने चुप तो करा दिया परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।'' स्वामी जी ने गम्भीर स्वर में कहा'' ..... तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।'' मुंशीराम जी को स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और सत्य विद्या के आदि मूल परमेश्वर में ऐसी श्रद्धा हुई कि सफल गृहस्थ जीवन एवं वानप्रस्थ के बाद जब महात्मा मुंशीराम ने संन्यास 1917 ई. में लिया तो अपना नया नाम चुना श्रद्धानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती।

पुत्र मुंशीराम से पिता नानकचन्द ने यह आशा न की कि मृत्यु पश्चात उनका श्राद्ध होगा, उन्हें कोई पानी भी देगा। किन्तु धीरे-धीरे वे पुत्र से प्रभावित होने लगे, पुत्र की धार्मिक आस्था एवं वैदिक विचार उन्हें भाने लगे। तब तक वे मुंशीराम जी की मुख्तारी वकालत एवं धनोपार्जन की क्षमता से प्रभावित तो थे ही, आर्यसमाज के वैदिक कर्म काण्ड की ओर भी झुकने लगे। मृत्यु से कुछ समय पूर्व उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी ''वैदिक हवन कराओ। अंतिम सांस के साथ भी कहा कि वैदिक हवन कराया जाये। पुत्र की धर्मनिष्ठा पिता पर अमिट छाप छोड़ चुकी थी।

शिक्षा जगत में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की अनुपम देन हैः गुरुकुल कांगड़ी। यह था पुरातन और नूतन शिक्षा प्रणालियों का मधुर-मिश्रण। गुरुकुल कांगड़ी की चर्चा विस्तार से करने के पूर्व यह लिखना आवश्यक है कि ''क्या महाविद्यालय जालन्धर'' का बीज बोया मुंशीराम जी ने ''आर्य पुत्री पाठशाला'' के रूप में। इसका शुभारम्भ भी रोचक है। उनकी बड़ी बेटी, जो उस समय ईसाई संचालित शाला की छात्रा थी, उसने एक शाम एक गीत गया पिता के लिएः ''एक बार ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगे गा मोल; ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।'' इस पर मुंशीराम जी के कान खड़े हो गये और शिक्षा संस्थान के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया उन्होंने। इसी श्रृंखला में एक गुरुकुल की स्थापना तो उनके लिए वैदिक मान-मर्यादा का प्रश्न बन गया था। गुरुकुल की स्थापना में था जीवन, और असफलता में-मरण! महात्मा मुंशीराम गुरुकुल अभियान में सफल रहे और सत्तर वर्ष तक जिए।

26 नवम्बर 1896। आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री गोविन्दपुर आर्य समाज में प्रस्ताव पारित कर निर्णय लियाः गुरुकुल की स्थापना की जाये। मुंशीराम जी को योजना के कार्यान्वयन का

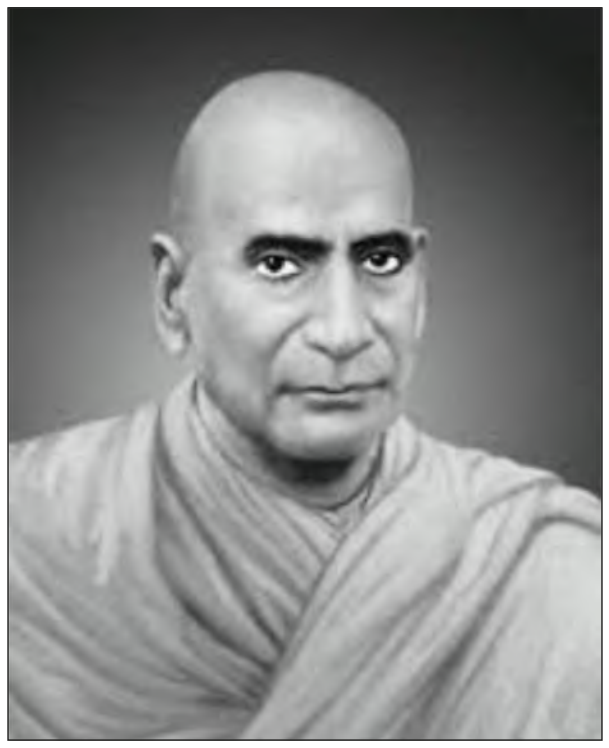

दायित्व सौंपा गया। मुंशीराम जी ने एक दिन भीष्म प्रतिज्ञा कीः गुरुकुल बनाने के लिए जब तक तीस हजार रुपया एकत्र न कर लूंगा, घर में पैर न रखूंगा। उन्होंने इस प्रतिज्ञा का पालन किया। धनराशि एकत्र करने के दौरान आर्य समाज जालन्धर में बोरिया-बिस्तर जमाया और महल समान मकान तज दिया। अंततः राशि एकत्र हुई, गुरुकुल की स्थापना हुई सन् 1900 ई में, अपना घर उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दे दिया। पैतृक भवन, अपने दो पुत्रों-हरिश्चन्द्र एवं इन्द्र की सहमति से, गुरुकुल कांगड़ी को भेंट कर दिया।

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) द्वारा बोया बीज उन्हीं के जीवन में अंकुरित हुआ, पौधा बनने लगा था वृक्ष और आज बन चुका है वट वृक्षः गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार। आर्ष शिक्षा प्रणाली को पुनः प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से 8 अप्रैल 1900 ई. को वैदिक आश्रम गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में है) में गुरुकुल की स्थापना हुई थी। गुरुकुल प्राकृतिक वातावरण में पनपे, इसलिए 2 मार्च 1902 ई. को कांगड़ी ग्राम, हरिद्वार के निकट गंगा तट पर स्थानांतरित हुआ। आर्य दानी, मुंशी अमन सिंह द्वारा दी गई 700 बीघे जमीन पर पुनः नींव पड़ी नाम पड़ा गुरुकुल कांगड़ी, निकटवर्ती स्थान के नाम पर। विद्यार्थी-ब्रह्मचारी के पहले दल ने प्रवेश पाया, उनमें थेः हरिश्चन्द्र और इन्द्र- महात्मा मुंशीराम के दोनों पुत्र 1912 ई. में वही दोनों प्रथम स्नातक हुए। पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का कांगड़ी अनुभव उन्हीं के शब्दों में ''भयंकर जंगल पार करके उस भूमि तक पहुंचने में साढ़े नौ घण्टे लगे। वैसे यह फासला कुल चार मील का था। ... घने जंगलों के बीच कई बीघे जमीन साफ की गई थी। फूस के छप्परों की एक लम्बी पंक्ति थी जो छात्रों के रहने का आश्रय स्थान था। खिली चांदनी में अद्भुत शोभा दिखा रहा था। .....यह गुरुकुल का प्रारम्भिक रूप था।'' पठन-पाठन अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में होता था। सभी समर्पित थे वेदानुकूल जीवन जीने के लिए कठिनाइयां स्वतः सरलता में परिणित हो गई। गुरुकुल तक जाने-आने का एकमात्र मार्ग नावों के कच्चे पुल पर से था। गंगा की वेगवती धारा उसे छिन्न-भिन्न कर देती तो महात्मा मुंशीराम, आचार्य और विद्यार्थी अपने श्रम से उसे फिर बना देते। चरित्र बल से मनोबल ऊँचा उठता था। तभी तो 1924 ई. को भयंकर बाढ़ ने वहां तब तक बने भवनों को नष्ट कर दिया तो कनखल-ज्वालापुर मार्ग के दक्षिण में गुरुकुल पुनः प्रतिस्थापित हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द के शिष्य दीपक जलाकर अंधकार दूर करते थे, उसे कोस कर नहीं। गुरुकुल के प्रथम आचार्य आजन्म ब्रह्मचारी गंगादत्त जी ब्रह्मचारियों की प्रेरणा का स्रोत थे।

पुलिस और सी. आई. डी. की रिपोर्ट को झुठलाते हुए, महात्मा मुंशीराम के व्यक्तित्व और कृतित्व से आकर्षित होकर गुरुकुल में आये- ब्रिटिश प्रतिपक्ष नेता और बाद में प्रधानमन्त्री, रेम्जे मैक्डॉनल्ड, यू. पी. के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन तत्कालीन वायसराय और महात्मा गांधी। उन्नति अभी भी हो रही है। वेद के साथ-साथ प्रबन्ध एवं कम्प्यूटर की शिक्षा गुरुकुल में दी जाती है। गुरुकुल को आज विश्वविद्यालय का दर्जा मिला है किन्तु कुछ मनीषियों का विचार है कि ''उन जीवन मूल्यों का ह्रास भी हुआ है जिनके उन्नयन के लिए ''महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल की स्थापना की थी।

आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती निर्भीकता की मूर्ति थे। ब्रिटिश तंत्र की तानाशाही के विरुद्ध जन आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए, चांदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजी सेना के मणिपुरी सैनिकों ने जलूस को आगे बढ़ने से रोका। उत्तेजित जन समूह पर सैनिकों ने संगीनें तानी-रूख आक्रामक था। गोली चलाने की धमकी दी। उस तनाव के माहौल में भीड़ को शान्त करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपने सीने से संन्यासी का काषाय वस्त्र हटाकर सैनिकों को सम्बोधित किया, पहले इस सीने में संगीन घोंपो, पहले मुझे गोली मारो। क्या गर्जना थी, क्या निर्भीकता थी। संन्यासी के तेज के आगे संगीनें झुक गई, रायफल की नली का रूख सीने से हट कर धरती की ओर हो गया; अवरूद्ध मार्ग खुल गया। विशाल हिन्दू-मुसलमान की मिली जुली भीड़ ने आर्य संन्यासी की जयकार की।

4 अप्रैल, 1919, जामा मस्जिद दिल्ली। मुसलमानों के विशाल समूह के आग्रह पर आमंत्रित थे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती। इतिहास में वहां से वेदमंत्र पाठ कर प्रवचन करने वाले प्रथम आर्य संन्यासी। उन्होंने ऋग्वेद के मंत्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया।

''ओ३म! तवं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो वभूविथ। (हमारे रक्षक पिता और मान दिलाने वाली माता, हम इस यज्ञ में आप से सफलता की कामना-याचना करते हैं) ओ३म् शांतिः और आमीन के साथ भाषण समाप्त हुआ। 6 अप्रैल को फतेहपुरी मस्जिद में यही दृश्य था। अंग्रेजी राज्य हिल उठा।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति नमाजियों की वफादारी क्षणिक थी। जब आर्य संन्यासी ने मलकाना (मुसलमान) राजपूतों को बड़ी संख्या में ''शुद्ध'' करके पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया तो मुल्ला-कठमुल्ला बौखला गये उन्होंने षडयन्त्र रचा। 23 दिसम्बर 1926 सायं 4 बजे नया बाजार स्थित निवास पर राजधानी दिल्ली में एक धर्मांध मुसलमान ने संन्यासी के सीने में दो गोलियां मारी। उनकी आत्मा ने शरीर त्याग दिया। हत्यारे को फांसी हुई।

कुछ ही समय पहले अपने पुत्र इन्द्र से स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने कहा थाः ''धर्मयज्ञ में मेरे प्राण की आहुति पड़े यह मेरे लिए गौरवमय संतोष का स्रोत होगा।''

- उपवन 609, सैक्टर-29, नोएडा-201303

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

19 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल

– जगतराम आर्य

19 दिसम्बर, 1927 ई., सोमवार प्रातःकाल छः बजे गोरखपुर जेल से फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठाः

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।''

तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की- ''मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।''

इसी प्रकार 16 दिसम्बर, 1927 को उन्होंने लिखाः-

''हे ईश! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।''

यह शहीद थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फांसी पर चढ़ गए। वे सच्चे देशभक्त थे, साहसी थे, आर्यवीर थे। वे देश के चरणों पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भांति उदित हुए थे। एक तारे की भांति ही वे टूट गए। उनकी उदय और अस्त की कहानी एक मंत्र की तरह प्रेरक है, शक्तिदायक है। युग आएंगे और चले जाएंगे, पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी, सदा एक पवित्र मंत्र की तरह रगों में शक्ति का संचार करती रहेगी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 ई. को पं. मुरलीधर तिवारी (शाहजहांपुर निवासी) के यहां हुआ था। मुरलीधर ऊँचे डीलडौल के व्यक्ति थे। घर की स्थिति सामान्य थी। वे बड़े साहस और धैर्य के साथ अपनी गृहस्थी का संचालन करते थे।

बिस्मिल जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हें एक मौलवी साहब पढ़ाया करते थे। पर उनका मन पढ़ने लिखने में बिल्कुल नहीं लगता था। वे बड़े उद्दंड थे। न स्वयं पढ़ते थे न दूसरे लड़कों को पढ़ने देते थे। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते गए, उनकी उद्दंडता बढ़ती ही गई। कभी-कभी अपनी बुरी आदतों के कारण उन्हें अपने पिता के द्वारा अधिक दंडित भी होना पड़ता था।

पर संयोग की बात, एक दिन शाहजहांपुर में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन की कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोड़कर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे, प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाजी नेताओं के उपदेश सुनने लगे। आर्य समाज मंदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय, दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति का सागर उमड़ने लगा। उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी और साइकिल चलाने में अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौड़ने और पैदल चलने में वे बड़े तेज थे। साठ-साठ मील तक पैदल चले जाते थे, पर उनमें नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भांति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वे देश की बातें सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय में भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तों के चरित्र पढ़ने लगे, देश प्रेम से भरी हुई कविताओं का सस्वर पाठ करने लगते, तो वातावरण में एक रस सा पैदा हो जाता था।

बिस्मिल जी को ऊँची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होंने सामान्य रूप से उर्दू और अंग्रेजी पढ़ी थी। उन्होंने एन्ट्रेन्स की परीक्षा तो नहीं पास की थी, पर एन्ट्रेन्स तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होंने स्वतंत्र रूप से पढ़कर बाद में उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू में वे शायरी करते थे। उनकी कविताएं बड़ी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थीं। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की है। उर्द और अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्हें बांग्ला और हिन्दी का भी ज्ञान था।

ऋषि दयानन्द के जीवन और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय में देश प्रेम का अंकुर फूटा। जिन दिनों वे नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्हें स्वयंसेवक के रूप में सेवा समिति में काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति का कार्य करते हुए उनकी दृष्टि परसेवा की ओर आकर्षित हुई। परसेवा से और भी अधिक आगे बढ़कर उनकी दृष्टि देश सेवा पर गई। देश की गुलामी से उनके हृदय में दर्द पैदा होने लगा। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुःख देश का दुःख अंग्रेज सरकार के कारण है। फलतः वे अंग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध में सोच विचार करने लगे।

संस्कृता स्त्री पराशक्ति ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या–चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक :- 25 दिसम्बर 2022 से 30 दिसम्बर 2022 तक
स्थान :- श्री सुमेर उच्च माध्यमिक विद्यालय, महामन्दिर चौराहा, मण्डोर मार्ग, जोधपुर

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जाएगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जाएंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लेकर आएं।
- ऋतु अनुकूल वस्त्र व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लाएं।
- इच्छुक छात्राएं 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश-पत्र अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 नवम्बर 2022 तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस छः दिवसीय विशेष शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करवाएं। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट/ऑन लाईन खाता नं 05630110049792 IFSC Code : UCBA0000563ARYA VEER DAL JODHPUR के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु में दान देना चाहें तो आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइन्ड, दालिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

आर्य वीर दल, जोधपुर

कार्यालय :- आर्य समाज, मण्डोर

सम्पर्क :-

9413957390, 9461286152, 9829345220, 9414919246, 8955866989

इन्हीं दिनों बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेंदालाल दीक्षित से क्रांतिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनों केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, पर वे इसी कच्ची उम्र में ही दीक्षित जी के दल में सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यों में से बन गए। बंगाल के क्रांतिकारियों से भी उन्होंने संपर्क स्थापित किया। वे बड़ी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियों के लिए अस्त्र-शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र-शस्त्र और धन संग्रह के सम्बन्ध में कई रोचक और साहसपूर्ण कहानियां कही जाती हैं।

बिस्मिल जी डकैतियों के द्वारा भी दल के लिए धन एकत्र किया करते थे। वे सरकारी खजानों, डाकखानों और बैंकों को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होंने 1925 ई. में 9 अगस्त को काकोरी में ट्रेन डकैती करके अपने अद्भुत साहस का परिचय दिया था।

काकोरी लखनऊ के पास एक स्टेशन है। 1925 ई. की 9 अगस्त का दिन था। संध्या के लगभग 8 बज रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले ही अपने साथियों से विचार-विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी।

यद्यपि यह सारा काम बड़ी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया, फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरूप गिरफ्तारियां की जाने लगीं। एक-एक करके ट्रेन डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी 25 दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथियों पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी के पहले बिस्मिल जी के माता-पिता जेल में उनसे मिलने के लिए गए। माता-पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मां को देखा, तो उनकी आंखे डबडबा गई। अश्रु बूंदे रह-रहकर आंखों से टपकने लगीं। बिस्मिल जी की आंखों में अश्रु बूंदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं- ''मैं समझती थी, तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आसूं बहाकर अब अन्तिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो! इस कायरता से क्या होगा? तुम्हें वीर की तरह हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा करना था। उसके बाद तुम देश की चीज बन गए थे, सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुःख नहीं है।''

बिस्मिल जी अपनी मां के ओजस्वी शब्दों को सुनकर चुप न रह सके। वे आंसू पोछते हुए बोल उठे- ''मां, तुम मेरी मां हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकीं। मां, मैं मृत्यु से भयभीत होकर नहीं रो रहा हूँ। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है, उसी प्रकार मां, तुम्हें देखकर मेरी आंखों से कुछ अश्रुबूंदें निकल पड़ी। विश्वास रखो मां, मैं मृत्यु से संतुष्ट हूं, पूर्णरूप से संतुष्ट हूँ।''

गोरखपुर जेल में 1927 ई. की 19 दिसम्बर का प्रातः काल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पड़े। उन्होंने शौचादि से निवृत्त होकर संध्या की, हवन यज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फांसी के तख्ते की ओर चल पड़े। वे गुनगुनाते हुए ही फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होंने फांसी के तख्ते पर चढ़कर जोर से आवाज ऊँची की- ''अंग्रेज सरकार का नाश हो, अंग्रेज सरकार का नाश हो!''

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज को जन–आन्दोलन बनाया जाये – बिरजानन्द एडवोकेट

किसानों और नौजवानों की आवाज बने आर्य समाज – रणधीर सिंह रेढू

धर्म के नाम पर चल रहे पाखंड तथा अन्धविश्वास से भी जनता का होता है शोषण – सहदेव बेधड़क

बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कारित करना आवश्यक है – बहन पूनम आर्या

महिलाओं पर हो रहे अत्याचार सभ्य समाज के माथे पर कलंक है – बहन प्रवेश आर्या

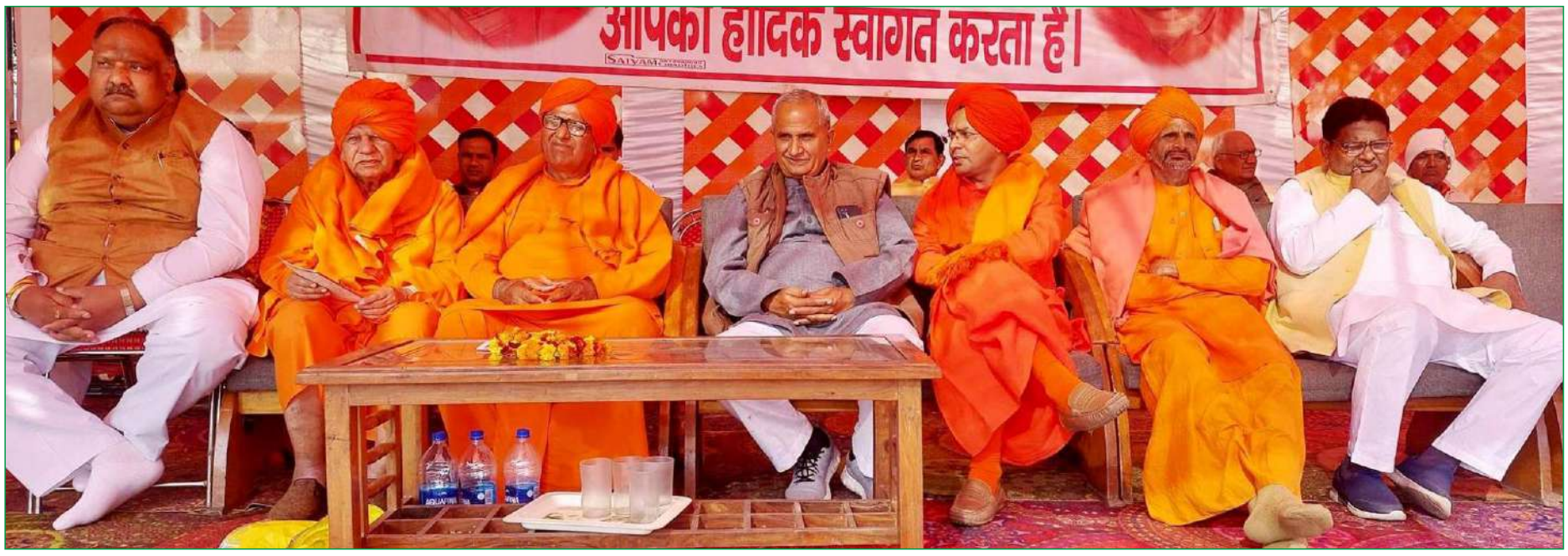

सफल बनाने के लिए अपना तन–मन–धन से सहयोग करने का संकल्प लें।

उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व गन्ना मंत्री और वर्तमान समय में चांदपुर से विधायक स्वामी ओमवेश जी ने कहा कि आर्य समाज जैसे तेजस्वी संगठन की वर्तमान समय में देश को अधिक आवश्यकता है। क्योंकि देश में सामाजिक सौहार्द, साम्प्रदायिक सद्भाव तथा नैतिकता का पतन होता जा रहा है। पूरे समाज में भय का वातावरण बना हुआ है तथा अन्धविश्वास एवं पाखण्ड का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। देश में फैली जातिप्रथा, नारी उत्पीड़न, अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, नशाखोरी आदि बुराईयों के खिलाफ आर्य समाज शुरू से संघर्ष करता रहा है। इसलिए आज आवश्यकता है कि आर्य समाज अपने स्वरूप को पहचाने और समाज में फैली बुराईयों के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करके लोगों को जागरूक करने का कार्य करें, जिससे समाज को इन बुराईयों से निजात दिलाई जा सके।

कार्यक्रम के संचालक व नशाबंदी परिषद् के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि देश में राष्ट्रीय स्तर पर नशाखोरी पर प्रतिबन्ध लगे और शराब के उत्पादन व विक्रय पर पूर्ण रोक लगाई जाये। स्वामी जी ने कहा कि नशे के कारण परिवार के परिवार नष्ट हो रहे हैं। नशे की वजह से युवा वर्ग अपनी दिशा से दिग्भ्रमित हो रहे हैं, जिस कारण समाज में बहन बेटियाँ अपने आपको असुरक्षित महसूस करती हैं। नशे के बढ़ते प्रकोप से समाज का ताना–बाना बिगड़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी केन्द्र सरकार से माँग है कि पूरे देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाये।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि देश की आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के सिपाहियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। गुरु विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, सरदार अजीत सिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों की प्रेरणा से लाखों लोगों ने अपने आपको आजादी की बलिवेदी पर आहूत कर दिया। आज उसी का परिणाम है कि पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है।

वैदिक प्रवक्ता स्वामी नित्यानन्द जी अपने उद्बोधन में युवा वर्ग को संगठित करने पर बल दिया और उन्होंने कहा कि आगामी एक वर्ष में एक लाख आर्य युवकों को आर्य समाज से जोड़ा जाये।

इस अवसर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने आर्य समाज की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में शराबबन्दी आन्दोलन, सतीप्रथा विरोधी आन्दोलन, आतंकवाद विरोधी आन्दोलन तथा किसान आन्दोलन चलाये गये। जिनसे आर्य समाज का तेजस्वी स्वरूप आम जनता के समक्ष प्रस्तुत हुआ। आज आर्य समाज को एक बार फिर जन आन्दोलन बनाने की आवश्यकता है।

हरियाणा किसान यूनियन के प्रधान श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट ने कहा कि नशे के कारण आज देश का युवा बर्बाद हो रहा है तथा गरीब किसान और मजदूरों के घर बर्बाद हो रहे हैं। सरकारे लूट के ठेके खुलवाकर गरीब जनता को लुटवा रही हैं। उन्होंने कहा कि नशे के कारण जब देश का मेहनतकश मजदूर, किसान व युवा वर्ग बर्बाद हो जाएगा तो देश के विकास की अवधारणा भी पूरी तरह से निष्फल एवं निरर्थक हो जाएगी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या जी ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार देने की भी आवश्यकता है। यदि बच्चे शिक्षा के साथ–साथ संस्कारित होंगे तभी देश आगे बढ़ सकता है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने कहा कि समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या एवं बलात्कार की घटनाएं सभ्य समाज के माथे पर कलंक है। अतः इन्हें समाप्त करने के लिए समाज के जागरूक लोगों को आगे आना चाहिए और इन बुराइयों को मिटाने के लिए सक्रियता के साथ अभियान चलाकर कार्य करना चाहिए।

भारतीय भजनोपदेशक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क ने कहा कि धर्म के नाम पर चल रहे पाखंड तथा अन्धविश्वास के कारण भी जनता का शोषण किया जाता है और अनेक पाखंडी बाबा अपने को भगवान बताकर लोगों की भावनाओं का दोहन कर रहे हैं। इससे धर्म का सच्चा स्वरूप विकृत हो रहा है।

कार्यक्रम के दौरान आर्य समाज के 10 कर्मठ कार्यकर्ताओं को यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने कर–कमलों से सम्मान पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। सम्मानित किये जाने वालों में सर्वश्री सूरजमल छातर, देवेन्द्र सिंह सारण, डॉ. वेदप्रिय गुप्ता (कैथल), रामचन्द्र आर्य (बूढ़ाखेड़ा), प्रो. रामकुमार चौहान (कुरुक्षेत्र), श्री वेदपाल आर्य (ललितखेड़ा), रामदत्त आर्य (मिलखपुर), रविन्द्र कुमार आर्य (जुलानी), सूबे सिंह आर्य (खोखरी), श्रीमती बीना आर्या (जीन्द शहर) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यह प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन पिछले 32 वर्ष से प्रतिवर्ष विशाल स्तर पर आयोजित किया जाता है जिसमें महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये जाते हैं। इस महासम्मेलन में महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूसरी जन्मशती को ध्यान में रखते हुए भावी कार्यक्रम बनाने के लिए विशेष रूप से आयोजित किया गया था। महासम्मेलन में प्रान्त की विभिन्न आर्य समाजों के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। महासम्मेलन अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।